

“ઈમામે હુસૈન કી કરામાત”

યેહ રિસાલા

શૈખે તરીકત, અમીરે અહલે સુન્નત, બાનીએ દા'વતે
ઈસ્લામી હઝરતે અલ્લામા મૌલાના અબૂ બિલાલ

મુહમ્મદ ઇલ્યાસ અતાર કાદિરી રઝવી ઝિયાઈ بركاتههم العالیہ

ને ઉર્દૂ ઝબાન મેં તહરીર ફરમાયા હૈ. મજલિસે તરાજિમ
(દા'વતે ઈસ્લામી) ને ઈસ રિસાલે કો ગુજરાતી રસ્મુલ
ખત મેં મક્ત-બતુલ મદીના સે શાએઅ કરવાયા હૈ

ઈસ મેં અગર કિસી જગહ કમી બેશી પાએં તો મજલિસે
તરાજિમ કો મુત્તલઅ ફરમા કર સવાબ કમાઈયે.

રાબિતા: મજલિસે તરાજિમ

(દા'વતે ઈસ્લામી)

મક્ત-બતુલ મદીના®

અહમદઆબાદ. ફોન: **0091-79-2539 11 68**

Email : maktabahind@gmail.com

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ط وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ ط
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ ط بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ط

“या रब्बे हुसैन ! मुझे ँशके हुसैन दे” के ँककीस हुइइ की नलसुत से ँश
रलसाले को पढने की 21 नलतें

इरमाने मुस्तइ : صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : “مُسْلِمَانِ كِي نلखत ँस
के अमल से बेइतर है.”

(तबरानी मो'जम कबीर, खल्लः6, स-इइः185, इइसः5942)

इो मइनी इूल :

(1) डलरैर अखी नलखत के कलसी डी अमले डेर क सवल नईं मलतल (2) खलतनी अखी
नलखतें खलतल, ँतनल सवल डी खलतल.

(1) इर डलर इइ व

(2) सललत और

(3) तअवुुल व

(4) तस्मलखल से आगलल कइंगल (इसी स-इइे के ँपर इी हुइ इो अरडी इडलरलत पढ लेने से
खलरें नलखतें पर अमल इो खलगेल)

(5) रलखलले इललडी عَزَّوَجَلَّ के ललये इस रलसाले कल अवलल तल आडलर मुतलललल कइंगल

(6) इतल वसु इस कल डल वुडू और

(7) कलडल इ मुतलललल कइंगल www.dawateislami.net

(8) कुरलनी आललत और

(9) अइलडीसे मुडलरकल की खललरत कइंगल

(10) खलं खलं “अलललड” कल नलले डलक आगेगल वलं عَزَّوَجَلَّ पढूंगल

(11) खलं खलं “सरकलर” कल इस्मे मुडलरक आगेगल वलं صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पढूंगल

(12) इस रलवलत عِنْدَ ذِكْرِ الظَّالِمِينَ تَزُولُ الرَّحْمَةُ या'नी नेक लुगुं के खलक के वकत रइमत नलखल इती
है.” (इललतुल ओलललल, खल्लः7, स-इइः335, इइसः10750) पर अमल करते हुअे इस रलसाले में

इलये गअे इडलले आली डकलड और डुरुगलने इीन عَلَيْهِمُ الرِّضْوَانُ के वलकेलत इूसरुं को सुनल कर
खलके सलललडीन की ड-र-कतें लूढूंगल

(13) (अडने खलती नुसडे पर) इनुइललरत डलस डलस डकलडलत पर अनुइर ललरुन कइंगल

(14) इूसरुं को येइ रलसाले पढने की तरगीड इलललंगल

(15) इस इइसे डलक “تَهَادُّوا تَحَابُّوا” या'नी अेक इूसरे को तुलइइ इो आडस में डलडुडत डढेगी.”

(डुअतल इडलले डललक, खल्लः2, स-इइः407, इइसः1731) पर अमल की नलखत से

(10) डुइरुडुल इरलड की नलसुत से कड अल कड 10 अइइ या इसडे तुइइक) येइ रलसाले डरीइ
कर इूसरुं को तुलइइतन इूंगल

(16) इस रलसाले के मुतललले कल सवल सलरी ँडुडत को इसलल कइंगल

(17) रलसाले वरुैरल में शर-इ ग-लती डलली तु नलशरुीन को तइरीरी तुैर पर डुतललल कइंगल

(नाशिरीन वगैरा को सिर्फ़ ज़बानी अगलात बता देना ખાસ मुझीद नहीं होता)

(18) भौकअ की मुनासबत से ँस रिसावे से दर्स दूंगा

(19) हर साल मुहर्मुल हराम में येह रिसाल पढ लूंगा

(20) जो बात समज में नहीं आयेगी उस के लिये आयते करीमा **فَسَلُوا أَهْلَ الذِّكْرِ إِنْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ**
तर्जमअे कन्जुल ँमान : “तो अै लोगो ँल्म वालों से पूछो अगर तुम्हें ँल्म नहीं.”

(पारः 14, अन्नडल, 43)

पर अमल करते हुअे उ-लमा से रुजूअ कइंगा

(21) जो बात समजने में दुश्वारी होगी उस को बार बार पढूंगा.

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ ط
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ ط بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ط

ఁमामे हुसैन की करामात

शैतान लाभ सुस्ती दिलाअे मगर आप सवाभ की नियत से येह रिसाला मुकम्मल पढ लीजिये.

ان شاء الله عزوجل **आप का सीना हुब्बे अडले बैत का मदीना बन जायेगा.**

दुइद शरीफ़ की इलीलत

बैथैन दिलों के यैन, रडभते दारैन, ताजदारे हरमैन, सरवरे कोनैन नानाअे हसनैन
صلى الله تعالى عليه وآله وسلم رضى الله تعالى عنهما का इरमाने रडमत निशान है जब जुमा'रात का दिन आता है
अल्लाह तआला इरिशतों को भेजता है जिन के पास यांदी का कागज और सोने के कलम
होते हैं वोह लिखते हैं, कौन यौमे जुमा'रात और शबे जुमुआ मुज पर कसरत से दुइदे पाक
पढता है.

(कन्जुल उम्माल, जिल्द:1, स-इला:250, उदीस:2174)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

विलादते बा करामत

राकिबे दोशे मुस्तफ़ा, صلى الله تعالى عليه وآله وسلم जिगर गोशअे मुर्तजा, दिलबन्दे इतिमा,
सुल्ताने करबला, सय्यिदुशशोहदा, ँमामे आली मकाम, ँमामे हुमाम, ँमामे तिश्नाकाम
हजरते सय्यिदुना ँमामे हुसैन رضى الله عنهم أجمعين सरापा करामत ये हत्ताके आप की विलादते बा
सआदत भी बा करामत है. हजरते सय्यिदी आरिफ़ बिल्लाह नूरुद्दीन अब्दुर्रहमान जामी
शवाहिदुनुबुव्वत में इरमाते हैं, सय्यिदुना ँमामे हुसैन رضى الله تعالى عنه की विलादते
बा सआदत यार शा'बानुल मुअज्जम सिने 4 डिजरी को मदीनअे मुनव्वरा **وَأَدَّاهَا اللَّهُ شَرَفًا وَتَعْظِيمًا**
में मंगल के दिन हुई. मन्कूल है के ँमामे पाक رضى الله تعالى عنه की मुदते हम्ल छे माह है हजरते
सय्यिदुना यहुया **عَلَى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ** और ँमामे आली मकाम ँमामे हुसैन رضى الله تعالى عنه के ँलावा
कोई अैसा बर्या जिन्दा न रहा जिस की मुदते हम्ल छे माह हुई हो. عزوجل صلى الله تعالى عليه وآله وسلم

والله أعلم ورسوله أعلم

(शवाहिदुनुबुव्वत, स. 228, मक-त-अतुल उकीकड, तुकी)

મરહબા સરવરે આલમ ﷺ કે પિસર આએ હેં
 સચ્ચિદા ફાતેમા કે લખ્તે જિગર આએ હેં
 વાહ કિસ્મત કે ચરાગે હરમૈન આએ હેં
 એ મુસલમાનો ! મુબારક કે હુસૈન આએ હેં

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّد

રુખ્સાર સે અન્વાર કા ઘઝહાર

હઝરતે અલ્લામા જામી فَدَسِ سُرَّةَ السَّامِي મઝીદ ફરમાતે હેં : હઝરતે ઇમામે આલી મકામ સચ્ચિદુના ઇમામે હુસૈન رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ કી શાન યેહ થી કે જબ અંધેરે મેં તશરીફ ફરમા હોતે તો આપ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ કી મુબારક પેશાની ઓર દોનોં મુકદ્દસ રુખ્સાર સે અન્વાર નિકલતે ઓર કુર્બો જવાર ઝિયાબાર (યા'ની રૌશન) હો જાતે.

(ઐઝન, સ.228)

તેરી નસ્લે પાક મેં હૈ બરયા બરયા નૂર કા
 તૂ હૈ ઐનો નૂર તોરા સબ ઘરાના નૂર કા

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّد

કુંવેં કા પાની ઉબલ પડા

હઝરતે સચ્ચિદુના ઇમામે આલી મકામ ઇમામે હુસૈન رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ જબ મદીનએ મુનવ્વરા સે મક્કએ મુકર્રમા رَأَاهُمَا اللَّهُ شَرَفًا وَتَعْظِيمًا કી તરફ રવાના હુએ હઝરતે સચ્ચિદુના ઇબ્ને મુતીઅ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ સે મુલાકાત હુઈ. ઉન્હોં ને અર્ઝ કી, મેરે કુંવેં મેં પાની બહુત હી કમ હૈ, બરાએ કરમ ! દુઆએ બ-ર-કત સે નવાઝ દીજિયે. આપ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ને ઉસ કુંવેં કા પાની તલબ ફરમાયા. જબ પાની કા ડોલા હાઝિર કિયા ગયા તો આપ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ને મુંહ લગા કર ઉસ મેં સે પાની નોશ કિયા ઓર કુલ્લી કી. ફિર ડોલ કો વાપસ કુંવેં મેં ડાલ દિયા તો કુંવેં કા પાની કાફી બઠ ભી ગયા ઓર પહલે સે ઝિયાદા મીઠા ઓર લઝીઝ ભી હો ગયા.

(અત્તબકાતુલ કુબ્રા, જિ.5, સ.110, દારુલ કુતુબિલ ઇલ્મિયા બૈરૂત)

બાગ જન્નત કે હેં બહરે મદ્હ ખ્વાને અહલે બૈત

તુમ કો મુઝ્દા નાર કા એ દુશ્મનાને અહલે બૈત

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّد

ઘોડે ને બદ લગામ કો આગ મેં ડાલ દિયા

ઇમામે આલી મકામ, ઇમામે અર્શ મકામ, ઇમામે હુમામ, ઇમામે તિશનાકામ હઝરતે સચ્ચિદુના ઇમામે હુસૈન رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ યૌમે આશૂરા યા'ની બરોઝ જુમુઅતુલ મુબારક 10 મુહર્રમુલ હરામ સિને 61 હિજરી કો યઝીદિયોં પર ઇત્મામે હુજજત કરને કે લિયે જિસ વક્ત મૈદાને કરબલા મેં ખુત્બા ઇશાદ ફરમા રહે થે ઉસ વક્ત આપ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ કે મઝ્લૂમ કાફિલે ખેમોં કી હિફાઝત કે લિયે ખન્દક મેં રૌશન કર્દા આગ કી તરફ દેખ કર એક બદ ઝબાન યઝીદી (માલિક બિન ઉવા) ઇસ તરહ બકવાસ કરને લગા, “એ હુસૈન ! رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ તુમને

वहां की आग से पहले यहीं आग लगा दी !” उठरते सय्यिदुना एमामे आली मकाम رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने इरमाया : كَلِمَاتٍ بِأَعْدُوِّ اللَّهِ या’नी “अै दुश्मने जुदा ! तू जूटा है, क्या तुजे येह गुमान है के مَعَاذِ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ में दोऊभ में जाउंगा !” एमामे आली मकाम رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के काइले के अेक जां निसार जवान उठरते सय्यिदुना मुस्लिम बिन औसज رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने उठरते एमामे आली मकाम رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से उस मुंह इट बढ लगाम के मुंह पर तीर माने की एज्जत तलब की. उठरते एमामे आली मकाम رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने येह इरमा कर एज्जत देने से एन्कार किया के उमारी तरफ से उभे का आगाज नहीं होना याहिये. इर एमामे तिश्नाकाम رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने दस्ते हुआ बुलन्द कर के अर्ज की, “अै रब्बे कइलार ! عَزَّوَجَلَّ एस ना बकार को अजाबे नार से कबल भी एस दुन्याअे ना पाअेदार में आग के अजाब में मुब्तला इरमा.” इरैन हुआ मुस्तज्जब (कबूल) हुँ और उस के घोडे का पाँउ जमीन के अेक सूराभ पर पडा जिस से घोडे को जटका लगा और बे अदब व गुस्ताभ यजीदी घोडे से गिरा, उस का पाँउ रकाब में उल्ला, घोडा उसे घसीटता हुवा दौडा और आग की भन्दक में डाल दिया. और बढ नसीब आग में जल कर तसम हो गया. एमामे आली मकाम رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने सजदअे शुक्र अदा किया, उभे एलाही बजा लाअे और अर्ज की : “या अद्लाह عَزَّوَجَلَّ तेरा शुक्र है के तू ने आले रसूल के गुस्ताभ को सजा दी.”

(सवानेहे करबला, स.88)

अहले बैते पाक से बे बाकियां गुस्ताभियां

www.dawateislami.net
رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْكُمْ दुश्मनाने अहले बैते

सियाह बिच्छू ने डंक मारा

गुस्ताभ व बढ लगाम यजीदी का हाथों हाथ तयानक अन्जाम देष कर भी बजाअे एभ्रत हासिल करने के एस को अेक एत्तिफाकी अम्र समजते हुअे अेक बेबाक यजीदी ने बका : आप को अद्लाह عَزَّوَجَلَّ के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से क्या निस्बत ? येह सुन कर कलबे एमाम को सप्त एजा पलोंथी और तडप कर हुआ मांगी : “अै रब्बे जब्बार عَزَّوَجَلَّ एस बढ गुइतार को अपने अजाब में गरिइतार इरमा.” हुआ का असर हाथों हाथ जालिर हुवा, उस बकवासी को अेक दम कजाअे हाजत की जइरत पेश आई, इरैन घोडे से उतर कर अेक तरफ को भागा और बरहना हो कर बैठा, नागाह अेक सियाह बिच्छू ने डंक मारा नजसत आलूदा तडपता इरता था, निहायत ही जिल्लत के साथ अपन लश्करियों के सामने उस बदनसीब की जान निकली. मगर उन संग दिलों और बे शर्मों को एभ्रत न हुँ एस वाकिअे को भी उन लोगों ने एत्तिफाकी अम्र समज कर नजर अन्दाज कर दिया.

(अैजन, स.89)

رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا كَرَّمَ اللهُ وَجْهَهُ الْكَرِيمَ

अली के प्यारे जातूनो कियामत के जिगर पारे
 जमीं से आस्मां तक धूम है एन की सियाहत की

गुस्ताफे हुसैन प्यासा मरा

यजीदी झौज का अेक सप्त दल मुञ्नी शप्स ँमामे आली मकाम رضی اللہ تعالیٰ عنہ के सामने आ कर यूं बकने लगा : “देओ तो सडी” दरियाअे कुरात कैसा भौजे मार रडा है, षुदा عزوجل की कसम ! तुम्हें ँस का अेक क्तरा भी न मिलेगा और तुम यूंडी प्यासे हलाक हो जाओगे.” ँमामे तिशनाकाम رضی اللہ تعالیٰ عنہ ने बारगाडे रब्बुल अनाम عزوجل में अर्ज की, () या’नी “या अद्लाड عزوجل ँस को प्यासा मार.” ँमामे आली मकाम رضی اللہ تعالیٰ عنہ के दुआ मांगते डी उस बे हया मुञ्नी का घोडा बलक कर दौडा, मुञ्नी पकडने के लिये उस के पीछे भागा, प्यास का ग-लबा हुवा, ँस शिदत की प्यास लगी के अल अतश ! अल अतश ! या’नी हाअे प्यास ! हाअे प्यास ! पुकारता था मगर पानी जब ँस के मुंह से लगाते थे तो अेक क्तरा भी पी न सकता था यहां तक के ँसी शिदते प्यास में तडप तडप कर मर गया.

(सवानेडे करबला, स. 90)

كُرِّمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمَ

हां मुज को रभो याद के में डैदर का पिसर हूं
और भागे नुबुवत के शजर का में समर हूं
में दीदअे छिम्मत के लिये नूरे नजर हूं
प्यासा हूं मगर साकियो कौसर का पिसर हूं

करामात इत्तमामे हुज्जत की कडी थी

भीठे भीठे ँस्लामी भाँयो ! देषा आप ने ! ँमामे आली मकाम رضی اللہ تعالیٰ عنہ की शाने आली किस कदर अजमतवाली है. मा’लूम हुवा के षुदावन्दे गफूर عزوجل को ँमामे पाक رضی اللہ تعالیٰ عنہ की बे अदबी क्त्अन ना मन्जूर है. और आप رضی اللہ تعالیٰ عنہ का बढ गो दोनों जहां मईद व मत्रुद¹ है. गुस्ताफाने हुसैन को दुन्या में भी दईनाक सजाओं का सामना हुवा और ँस में यकीनन बडी ँभ्रत है. सदरुल अफ्जिल हजरते अदलामा मौलाना सय्यिद मुहम्मद नईमुदीन मुरादआबादी عليه رحمة الله बा’ज गुस्ताफाने हुसैन के हाथों हाथ होने वाले ँभ्रतनाक बढ अन्जाम के वाकेआत नकल करने के बा’द तहरीर इरमाते हैं : इरजन्दे रसूल को येह बात भी दिषा देनी थी के ँस की मकबूलिय्यते बारगाडे हक عزوجل पर और उन के कुर्बो मन्जिलत पर जैसी के नुसूसे कसीरा व अहादीसे शडीरा शाडिद है अैसे डी ँन के षवारिक व करामात भी गवाल हैं. अपने ँस इज़ल का अमली ँजहार भी ँत्तमामे हुज्जत के सिद्विले की अेक कडी थी के अगर तुम आंष रभते हो तो देष लो के जो अैसा मुस्तजबुदा’वात¹ है उस के मुकाबले में आना षुदा عزوجل से जंग करना है. ँस का अन्जाम सोय लो और बाज रडो मगर शरारत के मुजस्समे ँस से भी सबक न ले सके और दुन्याअे ना पाअेदार की छिर्स का भूत जो उन के सरो पर सुवार था उस ने ँन्हें अन्धा बना दिया.

(सवानेडे करबला, स.90)

नूर का सुतून और सफ़ेद परिन्टे

ईमामे आली मकाम رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की शहादत के बा'द आप के सरे मुनव्वर से मु-तअदद करामात का जुहूर हुवा. अहले बैत عَلَيْهِمُ الرِّضْوَانُ के काइले के बकिय्या अफ़राद 11 मुहर्मुल हराम को कूड़ा पछोंये जब के शु-हदाअे करबला عَلَيْهِمُ الرِّضْوَانُ के मुबारक सर उन से पहले ही वहां पछोंय युके थे. ईमामे आली मकाम رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ का सरे अन्वर रुस्वाअे जमाना यजीदी बद बप्त “जौली बिन यजीद” के पास था येह मर्दूद रात के वक्त कूड़ा पछोंया. कसरे अमारत (या'नी गवर्नर हाउस) का दरवाजा बन्द हो युका था. येह सरे अन्वर को ले कर अपने घर आ गया. जालिम ने सरे अन्वर को बे अ-दबी के साथ जमीन पर रख कर अेक बडा भरतन उस पर उलट कर उस को ढांप दिया और अपनी बीवी “नवार” के पास जा कर कहा : मैं तुम्हारे लिये जमाने भर की दौलत लाया हूं, वोह देभ हुसैन رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ बिन अली عَزَمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ التَّوَكُّلُ का सर तेरे घर पर पडा है. वोह बिगड कर बोली : “तुज पर जुदा عَزَّوَجَلَّ की मार ! लोग तो सीमो जर लाअें और तू इरजन्दे रसूल का मुबारक सर लाया है. जुदा عَزَّوَجَلَّ की कसम ! अब मैं तेरे साथ कभी न रहूंगी.” “नवार” येह केह कर अपने बिछौने से उठी और जिधर सरे अन्वर तशरीफ़ इरमा था उधर आ कर बैठ गई. उस का बयान है : जुदा عَزَّوَجَلَّ की कसम ! मैं ने देभा के अेक नूर बराबर आस्मान से उस भरतन तक मिल्वे सुतून यमक रहा था और सफ़ेद परिन्टे उस के ईद गिर्द मंडला रहे थे. जब सुब्ह हुई तो जौली बिन यजीद सरे अन्वर को ईबने जियादे बद निहाद के पास ले गया.

(अल कामिल इत्तारीअ, जि.3, स.434)

बहारों पर है आज आराईशों गुलजारे जन्नत की
सुवारी आने वाली है शहीदाने महब्बत की

जौली बिन यजीद का दर्दनाक अन्जाम

दुन्या की महब्बत और मालो जर की हवस ईन्सान को अन्धा और अन्जाम से बे भबर कर देती है. बद बप्त जौली बिन यजीद ने दुन्या ही की महब्बत की वजह से मजलूम करबला का सरे अन्वर तन से जुदा किया था. मगर यन्द ही भरस के बा'द ईस दुन्या ही में उस का अैसा भौईनाक अन्जाम हुवा के कलेजा कांप जाता है युनान्ये यन्द ही भरस के बा'द मुप्तार स-कई ने कातिलीने ईमामे हुसैन के बिलाइ जो ईन्तिकाभी कारवाई की ईस जिम्न में सद्रुल अफ़जिल हजरते अदलामा मौलाना सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِمُ الرِّضْوَانُ इरमाते हैं : मुप्तार ने अेक हुकम दिया के करबला में जो शप्स (लश्करे यजीद के सिपह सालार) अम्र बिन सअूद का शरीक था वोह जहां पाया जाअे मार डाला जाअे. येह हुकम सुन कर कूड़ा के जड़ा शिआर सूरमा बसरा भागना शुरुअ हुअे. मुप्तार के लश्कर ने उन का तआकुब किया जिस को जहां पाया भत्म कर दिया, लाशें जला डाली, घर लूट लिये. “जौली बिन

યઝીદ” વોહ ખબીસ હૈ જિસ ને હઝરતે ઇમામે આલી મકામ, સય્યિદુના ઇમામે હુસૈન رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ કા સરે મુબારક તને અકદસ સે જુદા ક્રિયા થા. યેહ રૂ સિયાહ ભી ગરિફતાર કર કે મુખ્તાર કે પાસ લાયા ગયા, મુખ્તાર ને પહલે ઇસ કે ચારોં હાથ પૈર કટવાએ ફિર સૂલી ચઢાયા, આખિર આગ મેં ઝોંક દિયા. ઇસ તરહ લશ્કરે ઇબ્ને સઅદ કે તમામ અશરાર કો તરહ તરહ કે અઝાબોં કે સાથ હલાક ક્રિયા. છે હઝાર કૂફી જો હઝરતે ઇમામે આલી મકામ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ કે કતલ મેં શરીક થે ઉન કો મુખ્તાર ને તરહ તરહ કે અઝાબોં કે સાથ હલાક કર દિયા.

(સવાનેહે કરબલા, સ.122)

એ તિશનગાને ખૂને જવાનાને અહલે બૈત
કુતોં કી તરહ લાશે તુમ્હારે સડા ક્રિયે
રુસ્વાએ ખલક હો ગએ બરબાદ હો ગએ
તુમ ને ઉજાડા હઝરતે ઝહરા કા બોસ્તાં
દુન્યા પરસ્તો ! દીન સે મુંહ મોડ કર તુમ્હેં
આખિર દિખાયા રંગ શહીદોં કે ખૂન ને

દેખા કે તુમ કો ઝુલ્મ કી કેસી સઝા મિલી
ધૂરે¹ પે ભી ન ગોર² કો તુમ્હારી જા મિલી
મદૂદ ! તુમ કો ઝિલ્લતે હર દોસરા મિલી
તુમ ખુદ ઉજાડ ગએ તુમ્હેં યેહ બદ્દુઆ મિલી
દુન્યા મિલી ન એશો તરબ³ કી હવા મિલી
સર કટ ગએ અમાં ન તુમ્હેં ઇક ઝરા મિલી

પાઈ હૈ ક્યા નઈમ ઉન્હોં ને અભી સઝા
દેખેંગે વોહ જહીમ⁴ મેં જિસ દિન સઝા મિલી

નેઝે પર સરે અકદસ કી તિલાવત

હઝરતે સય્યિદુના ઝૈદ બિન અરકમ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ કા બયાન હૈ : જબ યઝીદિયોં ને ઇમામે આલી મકામ, સય્યિદુના ઇમામે હુસૈન رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ કે સરે અન્વર કો નેઝે પર ચઢા કર કૂફા કી ગલિયોં મેં ગશ્ત ક્રિયા ઉસ વક્ત મેં અપને મકાન કે બાલાખાને પર થા. જબ સરે મુબારક મેરે સામને સે ગુઝરા તો મેં ને સુના કે સરે પાક ને (પારહ 15, સૂરતુલ કહૂફ કી આયત નમ્બર 9) તિલાવત ફરમાઈ :

أَمْ حَسِبْتَ أَنَّ أَصْحَابَ
الْكَهْفِ وَالرَّقِيمِ كَانُوا مِنْ
آيَاتِنَا عَجَبًا

તર્જમએ કન્ઝુલ ઇમાન : ક્યા તુમ્હેં મા'લૂમ હુવા કે પહાડ કી ખોહ (ગાર) ઓર જંગલ કે કનારે વાલે હમારી એક અજબ નિશાની થે. (શવાહિદુન્નુબુવ્વત, સ.231)

ઇસી તરહ એક દૂસરે બુરુગ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ને ફરમાયા કે જબ યઝીદિયોં ને સરે મુબારક કો નેઝે સે ઉતાર કર ઇબ્ને ઝિયાદે બદ નિહાદ કે મહલ મેં દાખિલ ક્રિયા, તો આપ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ કે મુકદ્દસ હોંટ હિલ રહે થે ઓર ઝબાને અકદસ પર પારહ 13 સૂરએ ઇબ્રાહીમ કી આયત નમ્બર 42 કી તિલાવત જારી થી :

وَلَا تَحْسَبَنَّ اللهُ غَافِلًا عَمَّا يَعْمَلُ
الظَّالِمُونَ

તર્જમએ કન્ઝુલ ઇમાન : ઓર હરગિઝ અલ્લાહ عَزَّ وَجَلَّ કો બે ખબર ન જાનના ઝાલિમોં કે કામ સે.

(રોઝતુશ્શુહદા મુતર્જમ, જિલ્દ:2, સ.385)

ईबादत हो तो ऐसी हो तिलावत हो तो ऐसी हो सरे शम्बीर तो नेजे पे भी कुरआं सुनाता है

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

मन्डाल बिन अम्र केहते हैं : वल्लाह عَزَّوَجَلَّ में ने ब यश्मे जुद देजा के जब ईमामे हुसैन رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के सरे अन्वर को लोग नेजे पर लिये जाते थे उस वक्त में “दिमिशक” में था. सरे मुबारक के सामने अक शम्स सूरतुल कल्फ पढ रहा था जब वोह आयत नम्बर 15 पर पड़ोया :

أَنَّ أَصْحَابَ الْكَهْفِ وَالرَّقِيمِ كَانُوا مِنْ آيَاتِنَا عَجَبًا तर्जमअे कन्जुल ईमान : पहाड की जोह (गार) और जंगल के कनारे वाले हमारी अक अज्जब निशानी थे.

उस वक्त अल्लाह तआला ने कुव्वते गोयाई बप्शी तो

सरे अन्वर ने ब ज्जबाने इसीह इरमाया : **أَعْجَبُ مِنْ أَصْحَابِ الْكَهْفِ قَتْلِي وَحَمَلِي** “अस्हाबे कल्फ के क्तल के वाकिअे से मेरा क्तल और मेरे सर को लिये फिरना अज्जब तर है.”

(शर्हुस्सुदूर, स.212)

सर शहीदाने महब्बत के हैं नेजों पर बुलन्द और उंगी की जुदा ने ईज्जो शाने अहले बैत

भीठे भीठे ईस्लामी लाईयो! सद्रुल अज़्जिल उजरते अल्लामा मौलाना सय्यिद मुहम्मद नईमुदीन मुरादआबादी عليه رحمة الله الهادي अपनी किताब सवानेहे करबला में येह हिकायत नकल करने के बा’द इरमाते हैं : दर हकीकत बात येही है क्यूंके अस्हाबे कल्फ पर काफ़िरो ने जुल्म किया था और उजरते ईमामे आली मकाम رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ को इन के नाना जान صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की उम्मत ने मेहमान बना कर बुलाया, फिर बे वफ़ाई से पानी तक बन्द करव दिया ! आल व अस्हाब عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को उजरते ईमामे पाक رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के सामने शहीद किया. फिर जुद उजरते ईमामे आली मकाम رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ को शहीद किया, अहले बैते किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को असीर (या’नी कैदी) बनाया, सरे मुबारक को शहर शहर फिराया. अस्हाबे कल्फ सावहा साल तवील नींद के बा’द बोले येह उजर अज्जब है मगर सरे अन्वर का तने मुबारक से जुदा होने के बा’द कलाम इरमाना अज्जब तर है.

(सवानेहे करबला, स.118)

पून से लिपा हुवा शे’र

यकीद पलीद के नापाक लश्करी शु-हदाअे करबला عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के पाकीजा सरो को ले कर जा रहे थे. दरी अस्ना अक मन्जिल पर ठहरे. उजरते सय्यिदुना शाह अब्दुल अजीज मोहदिस देहलवी عليه رحمة القوي लिभते हैं, वोह नबीज या’नी भजूर का शीरा पीने लगे. अक और रिवायत में है, या’नी वोह शराब पीने लगे. ईतने में अक लोहे का कलम नुमूदार हुवा और उस ने पून से येह शे’र लिभा, **أَرْجُو أُمَّةً قَتَلَتْ حُسَيْنًا شَفَاعَةَ جَدِّهِ يَوْمَ الْحِسَابِ**

(या'नी क्या हुसैन رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के कातिल येह भी उम्मीद रખते हैं के रोजे क्रियामत उन के नाना ज्ञान صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की शक्रात पाअेंगे ?)

बा'उ रिवायात में है के हुजूर सरवरे आलम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की बिअसते शरीफा से तीन सौ बरस पेशतर येह शे'र अेक पत्थर पर लिखा हुवा मिला.

(अस्सवा'रकुल मोडरिंकड, स.194)

सरे अन्वर की क़रामत से राहिब का कबूले इस्लाम

अेक राहिब नस्रानी ने देर (या'नी गिर्जा घर) से सरे अन्वर देखा तो पूछा, बताया, कडा : “तुम बुरे लोग हो, क्या दस हजार अशरफियां ले कर इस पर राजी हो सकते हो के अेक रात येह सर मेरे पास रहे.” एन लालयियों ने कबूल कर लिया. राहिबने सरे मुबारक घोया, भुशू लगाई, रात भर अपनी रान पर रभे देभता रहा अेक नूर बुलन्द होता पाया. राहिब ने वोह रात रो कर काटी, सुब्ह इस्लाम लाया और गिरजा घर, इस का माल व मताअ छोड कर अपनी जिन्दगी अहले बैत عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की भिदमत में गुजार दी.

(अस्सवा'रकुल मुडरिंकड, स.199)

दौलते दीदार पाई पाक ज्ञानें बेय कर
करबला में भूब ही यमकी दुकाने अहले बैत

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّد

दिरहमो दीनार ठिकरियां बन गये

यजीदियों ने लश्करे इमामे आली मकाम رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ और एन के भैमों से जो दिरहमो दीनार लूटे थे और जो राहिब से लिये थे उन को तक्सीम करने के लिये जब थैलों के मुंड भोले तो क्या देखा के वोह सब दिरहम व दीनार ठिकरियां बने हुअे थे और उन के अेक तरफ पारह 13 सूअे इब्राहीम की आयत (नम्बर 42)

وَسَيَعْلَمُ الَّذِينَ ظَلَمُوا أَيَّ مُنْقَلَبٍ يَنْقَلِبُونَ 0

(तर्जमअे कन्जुल इमान: और हरगिज अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को बे भबर न ज्ञानना जालिमों के काम से.) और दूसरी तरफ पारह 19 सूअतुशो'रा की आयत (नम्बर 227) तहरीर थी :

وَسَيَعْلَمُ الَّذِينَ ظَلَمُوا أَيَّ مُنْقَلَبٍ يَنْقَلِبُونَ 0

तर्जमअे कन्जुल इमान: और अब ज्ञाना याहते हैं जालिम के किस करवट पर पलटा पाअेंगे.

(अैजान, स.199)

तुम ने उजाडा डरते डहरा का भोस्तां

तुम भुद उजड गअे तुम्हें येह बहदुआ मिली

रुस्वाअे भडक हो गअे बरबाद हो गअे

महूद ! तुम को जिल्लते हर दोसरा मिली

भीठे भीठे इस्लामी भाईयो ! येह कुदरत की तरफ से अेक दर्से इब्रत था के बहबप्तो !

तुम ने इस इंसानी दुनिया की जातिर दीन से मुंह मोड़ा और आले रसूल ﷺ पर जुल्मो सितम का पछाड तोड़ा. याद रभो ! दीन से तुम ने सप्त ला परवाही भरती और जिस इंसानी और बेवफा दुनिया के हुसूल के लिये ऐसा किया वोह भी तुम्हारे हाथ नहीं आयेगी और तुम ખસીरुदुन्या वल आभिरत (या'नी दुनिया में भी नुकसान और आभिरत में भी नुकसान) का मिस्दाक हो गये,

**दुनिया परस्तो दीन से मुंह मोड कर तुम्हें
दुनिया मिली न ऐशो तरब की उवा मिली**

तारीख शाहिद है के मुसल्मानों ने जब कभी अमलन दीन के मुकाबले में इस इंसानी दुनिया को तरजुह दी तो इस बे वफा दुनिया से भी हाथ धो बैठे और जन्हों ने इस इंसानी दुनिया को लात मार दी और कुरआनो सुन्नत के अहकामात पर मज़बूती से काँठम रहे और दीनो ईमान से मुंह नहीं मोड़ा बल्के अपने किरदार व अमल से येह साबित किया,

सर कटे, कुम्भा मरे सभ कुछ लुटे दामने अहमद न हाथों से छुटे

तो दुनिया हाथ बांध कर उन के पीछे पीछे हो गई और वोह दारैन में सुर्ष ३ हुये. मेरे आका आ'ला उजरते رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ इरमाते हैं,

**वोह के इस दर का उवा बल्के पुदा उस की दुर्घ
वोह के इस दर से फिरा अल्लाह उस से फिर गया**

सरे अन्वर कहाँ मद्फून हुवा ?

ईमामे आली मकाम, उजरते सय्यिदुना ईमामे हुसैन رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के सरे अन्वर के मद्फून के बारे में इज्तिहाद है. अल्लामा कुरतुबी और उजरते सय्यिदुना शाह अब्दुल अजीज मुहदिसे देहलवी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ इरमाते हैं के यजीद ने असीराने करबला और सरे अन्वर को मदीनअे मुनव्वरा رَاَدَا اللهُ شَرَفًاو تَعْظِيمًا रवाना कर दिया और मदीनअे मुनव्वरा رَاَدَا اللهُ شَرَفًاو تَعْظِيمًا में सरे अन्वर को तज्हीज व तकज़ीन के बा'द जन्नतुल बकीअ शरीफ में उजरते सय्यिदुना इतिमा जहरा या उजरते सय्यिदुना ईमामे असन मुजतबा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के पहलू में दफून कर दिया गया. बा'ज केहते हैं के असीराने करबला ने थालीस⁴⁰ रोज के बा'द करबला में आ कर सरे अन्वर को जसदे मुबारक से मिला कर दफून किया. बा'ज का केहना है, यजीद ने हुकूम दिया था के “ईमामे हुसैन رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के सरे अन्वर को शहरों में फिराओ.” फिराने वाले जब अस्कलान पहोंये तो वहां के अमीर ने उन से ले कर दफून कर दिया. जब अस्कलान पर फिरंगियों का ग-लबा हुवा तो तलाअेअ बिन रज़्ज़ीक जिस को सालेह केहते हैं ने तीस उजार³⁰⁰⁰⁰ दीनार दे कर फिरंगियों से सरे अन्वर लेने की इज्जत हासिल की और बमअ झौज व पुद्दाम नंगे पाठों वहां 8 जुमादिल आभिर सिने 548 हिजरी बरोज इतवार मिस्र में लाया. उस वक्त भी सरे अन्वर का भून ताजा था और उस से मुश्क की सी भुशबू आती थी. फिर उस ने सब्ज हरीर (रेशम) की थैली में आबनूसी कुर्सी पर रख कर इस के हम वज़्न मुश्को अम्बर और भुशबू उस के नीचे और ईद गिर्द रखवा कर

उस पर मशहदे हुसैनी बनवाया युनान्चे करीबे जान पलीली के मशहदे हुसैनी मशहूर है.

(शामे करबला, स.246)

किस शकी की है हुकूमत छाये क्या अंधेर है

दिन दहाडे लुट रहा है कारवाने अहले बैत

जुर्नते सरे अन्वर की जियारत

उजरते सय्यिदुना शैफ अब्दुल इत्ताह बिन अभी बक बिन अहमद शाईएँ पत्वती
رحمة الله تعالى عليه अपने रिसाले “नूरुल अैन” में नकल इरमाते हैं : शैफुल इस्लाम शम्सुदीन
लकानी قدس سره الزباني जो के अपने वक्त के शैफुशुयूफे मालिकिय्या थे हमेशा मशहदे मुबारक में
सरे अन्वर की जियारत को छाजिर छोते और इरमाते के उजरते इमामे आली मकाम
رضي الله تعالى عنه का सरे अन्वर इसी मकाम पर है. उजरते सय्यिदुना शैफ शहाबुदीन उनई
رحمة الله تعالى عليه इरमाते हैं : मैं ने मशहदे हुसैनी की जियारत की मगर मुजे शुभा हो रहा था के
सरे मुबारक इस मकाम पर है या नहीं? अयानक मुज को नींद आ गई, मैं ने ज्वाब में
देखा के अेक शप्स ब सूरते नकीब सरे मुबारक के पास निकला और हुजरे पुरनूर,
शाईएँ यौमुशुूर صلى الله تعالى عليه وآله وسلم के हुजरअे मुबारका में छाजिर हुवा और अर्ज की, “या
रसूलव्वाह ! عزوجل وصلى الله تعالى عليه وآله وسلم अहमद बिन हलबी और अब्दुलवह्दाब ने आप के
शहादे इमामे हुसैन رضي الله تعالى عنه के सरे मुबारक के मदइन की जियारत की है.” आप
صلى الله تعالى عليه وآله وسلم ने इरमाया : اللهم تقبل منهما وأغفر لهما औ अव्वाह इन दोनों की जियारत को
कबूल इरमा और दोनों को बप्श दे. उजरते सय्यिदुना शैफ शहाबुदीन उनई رحمة الله تعالى عليه
इरमाते हैं के उस दिन से मुजे यकीन हो गया के उजरते इमामे आली मकाम رضي الله تعالى عنه
का सरे अन्वर येहीं तशरीफ इरमा है फिर मैं ने मरने तक सरे मुकर्रम की जियारत नहीं
छोडी.

(शामे करबला, स.247)

इन की पाकी का जुदाये पाक करता है बयां

आयअे तत्हीर से जाहिर है शाने अहले बैत

सरे अन्वर से सलाम का जवाब

उजरते सय्यिदुना शैफ पलील अभील हसन तमारसी رحمة الله تعالى عليه सरे अन्वर की
जियारत के लिये जब मशहदे मुबारक के पास छाजिर छोते तो अर्ज करते : السَّلَامُ عَلَيْكُمْ يَا ابْنَ رَسُولِ اللَّهِ और
झौरन जवाब सुनते : وَعَلَيْكَ السَّلَامُ يَا أَبَا الْحَسَنِ अेक दिन सलाम का जवाब न पाया, हैरान हुअे और
जियारत कर के वापस आ गअे दूसरे रोज फिर छाजिर हो कर सलाम किया तो जवाब पाया.
अर्ज की, या सय्यिदी ! कल जवाब से मुशर्रफ न हुवा क्या वजह थी? इरमाया : औ अबुल
हसन ! कल इस वक्त मैं अपने नाना जान, रहमते आलमियान صلى الله تعالى عليه وآله وسلم की जिदमते
अकदस में छाजिर था और बातों में मशगूल था.

(शामे करबला, स.247)

जुदा होती हैं जनें जिस्म से जनां से मिलते हैं हुँ है करबला में गर्म मजलिस वस्वो हुँकत की

उठरते सय्यिदुना ईमाम अब्दुल वल्हाब शअूरानी قَدَسَ سِرُّهُ الرَّبَّانِي इरमाते हैं : अहले कश्क सूफिया ईसी के काईल हैं के उठरते सय्यिदुना ईमामे हुसैन رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ का सरे अन्वर ईसी मकाम पर है. शौभ करीमुदीन ખલ્વતી رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ इरमाते हैं के मैं ने रसूलुल्लाह عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की ईजाजत से ईस मकाम की जियारत की है.

(औजान, स.248)

ईसी मन्जर पे उर जानिब से लाभों की निगाहें हैं ईसी आलम को आंभें तक रही हैं सारी भक्त की

सरे अन्वर की अजुब भ-र-कत

मन्कूल है, मिस्र के सुल्तान “मलिक नासिर” को अेक शप्स के मुतअत्विक ईत्तिलाअ दी गई के येह शप्स जानता है के ईस महल में भजाना कहां दईन है मगर बताता नहीं. सुल्तान ने उगलवाने के लिये उस की ता’जीब या’नी अजियत देने का हुकम दिया. मुतवल्लीअे ता’जीब (या’नी अजियत देने पर मामूर शप्स) ने उस को पकडा और उस के सर पर भनाफिस (गुबरीले) लगाअे और उस पर किरमिज (या’नी अेक तरह के रेशम के कपडे) डाल कर कपडा बांध दिया. येह वोह भौइनाक अजियत व उकूबत है के ईस को अेक मिनट भी ईन्सान भरदाश्त नहीं कर सकता. ईस का दिमाग इटने लगता है और इौरन राज उगल देता है. अगर न बताअे तो कुछ ही देर के भा’द तडप तडप कर मर जाता है. येह सजा उस शप्स को कई मरतबा दी गई मगर उस को कुछ भी असर न हुवा बल्के हर मरतबा भनाफिस मर जाते थे. लोगों ने ईस का सबभ पूछा तो उस शप्स ने बताया के जब उठरते ईमामे आली मकाम, सय्यिदुना ईमामे हुसैन رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ का सरे मुबारक यहां मिस्र में तशरीफ लाया था أَحْمَدُ اللهِ عَزَّوَجَلَّ मैं ने उस को अकीदत से अपने सर पर उठाया था येह उसी की भ-र-कत और करामत है.

(शामे करबला, स.248)

इल लम्भों के भिलाअे हैं उवाअे दोस्त ने भून से सीया गया है गुल सिताने अहले बैत صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٌ

अजियतनाक कीडों का तआरुइ

मा’लूम हुवा मुतबरक रीज को अकीदत से सर पर रभना दोनों² जहांनों में भाईसे सआदत है ईस हिकायत में राज उगलवाने के लिये ईस्ते’माल किये जाने वाले जिन कीडों का तज्किरा है उन के बारे में अर्ज है : भनाफिस भूनइसा की जम्अ है जो के नजसत और गोबर में पैदा होने वाला सियाह रंग का दो² सींग वाला अेक कीडा है. उई में ईस को गुबरीला केहते हैं. किरमिज छोटे यने के बराबर सुर्भ रंग के रेशम जैसे कीडे को केहते हैं जो के

उमूमन बरसात के दिनों में बा'ज जंगलों में पैदा होता है. इस को सूखा कर उस से रेशम रंगने का सुर्भ रंग बनाया जाता है. इस की दवा भी बनती है और उस से तेल भी निकालते हैं. उर्दू में इस को भीर बडूटी कहते हैं उस जमाने में मुल्कमों से अ'तेराई जुर्म करवाने के लिये इस तरीके पर ईजा देते थे, सर पर नीचे दो बनाईस (गुबरीले) और उपर किरमिज डाल कर बांध देते थे, कीड़े काट काट कर सर की ખाल में सूराभ कर देते थे, उन सूराभों में किरमिज के टुकड़े और उन की रुतूबत वगैरा दाखिल हो जाती जिस से दिमाग की रगें इट जाती थीं. येह ऐसी ना काबिले बरदाश्त सजा होती के मुल्कम इौरन अ'तेराई जुर्म कर लेता था. इस इंगटे ખडे कर देने वाली दुन्यवी अजिय्यत के तज्जिकरे में अजाबे आभिरत की याद है. आह ! इन कीड़ों की तकलीफ जब के हम में से अक सेकन्ड के लिये कोई बरदाश्त नहीं कर सकता तो कब्रों जहन्नम में सांप का डसना और बिखूओं के डंक भला कौन सेह सकता है ! ખुदा न ખ्वास्ता किसी अक छोटे से गुनाह पर अगर पकड हो गई और बिड्ज़र्ज सिर्फ अक ही बिखू सर पर बिठा दिया गया तो हमारा क्या बनेगा !

डंक मखर का भी मुज से सहा जाता नहीं
 कब्र में बिखू के डंक कैसे सडूंगा या रब् عَزَّوَجَلَّ
 अइव कर और सदा के लिये राजी हो जा
 येह करम डोगा तो जन्नत में रडूंगा या रब् عَزَّوَجَلَّ

सर मुबारक की यमक दमक

अक रिवायत येह भी है के सरे अन्वर यजीदे पलीद के ખजाने ही में रहा. जब बनू उमय्या के बादशाह सुलैमान बिन अब्दुल मलिक का दौरे हुकूमत (सिने 96 ता 99 हिजरी) आया और उन को मा'लूम हुवा तो उन्हों ने सरे अन्वर की जियारत की सआदत हासिल की, उस वक्त सरे अन्वर की मुबारक छडियां सईद यांटी की तरह यमक रही थी, उन्हों ने ખुशू लगाई और कइन दे कर मुसल्मानों के कब्रिस्तान में दइन करवा दिया.

(तहज़ीबुत्तहज़ीब, जि.2, स.326, दारुल इंक बैरूत)

येहरे में आइताबे नुषुवत का नूर था
 आंभों में शाने सौलते सरकारे भू तुराब

रिमाये मुस्तफ़ा का राग

उजरते अल्लामा इब्ने हजर हैतमी मक्की عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰنِ रिवायत इरमाते हैं के सुलैमान बिन अब्दुल मलिक जनाबे रिसालते मआब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की जियारत से ખ्वाब में मुशरफ़ हुअे देखा के शहन्शाहे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ उन के साथ मुलातइत (या'नी लुत्फो करम) इरमा रहे हैं. सुब्ह उन्हों ने उजरते सय्यिदुना हसन बसरी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से इस ख्वाब की ता'बीर पूछी, उन्हों ने इरमाया : शायद तूने आले रसूल के साथ कोई भलाई की है. अर्ज़ की, ओ हां ! मैं ने उजरते सय्यिदुना इमामे आली मकाम इमामे हुसैन رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ

કે મુબારક સર કો ખજાનએ યઝીદ મેં પાયા તો ઉસ કો પાંચ કપડોં કા કફન દે કર અપને રુફકા કે સાથ ઈસ પર નમાઝ પઠ કર ઉસ કો દફન ક્રિયા હૈ. હઝરતે સચ્ચિદુના હસન બસરી رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ને ફરમાયા : આપ કા યેહી અમલ રિઝાએ મહબૂબે રબ્બે લમ યઝલ عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ કા સબબ હુવા હૈ.

(અસ્સવાઈકુલ મુહર્રિકહ, સ.199)

**મુસ્તફા ﷺ ઈઝ્ઝત બઢાને કે લિયે તા'ઝીમ દેં
હે બુલન્દ ઈકબાલ તેરા દૂદમાને અહલે બૈત**

صَلُّوا عَلَى الْخَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

મુસલફ મશાહદ કી વઝાહત

. ખતીબે પાકિસ્તાન વાઈઝે શીરીં બયાન હઝરતે મૌલાના અલ્હાજ અલ હાફિઝ મુહમ્મદ શફીઅ ઓકડવી عَلَيْهِ رَحْمَةُ النَّوَى અપની તાલીફ “શામે કરબલા” મેં તહરીર ફરમાતે હૈં : સરે અન્વર કે મુતઅલ્લિક મુખ્તલફ રિવાયાત હૈં ઓર મુખ્તલફ મકામાત પર મશાહદ બને હુએ હૈં તો યેહ ભી હો સકતા હૈ કે ઈન રિવાયાત ઓર મશાહદ કા તઅલ્લુક ચન્દ સરોં સે હો કયૂં કે યઝીદ કે પાસ તમામ શુહદાએ અહલે બૈત رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ કે સર ભેજે ગએ થે. તો કોઈ સર કહીં ઓર કોઈ કહીં દફન હુવા હો. ઓર નિસ્બત હુસ્ને અકીદત કી બિના પર યા કિસી ઓર વજહ સે સિર્ફ હઝરતે ઈમામે હુસૈન رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ કી તરફ કર દી ગઈ હો. **وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِحَقِيقَةِ الْحَالِ**

(શામે કરબલા, સ.249)

મગ્ફિરત સે માયૂસી કી લાઝા ખેઝ હિકાયત

હઝરતે સચ્ચિદુના અબૂ મુહમ્મદ સુલૈમાન અલ અઅમશ કૂફી તાબેઈ عَلَيْهِ رَحْمَةُ النَّوَى ફરમાતે હૈં : મેં હજજે બૈતુલ્લાહ કે લિયે હાઝિર હુવા, દૌરાને તવાફ એક શખ્સ કો દેખા કે ગિલાફે કા'બા કે સાથ ચિમટા હુવા કેહ રહા થા : યા અલ્લાહ ! عَزَّوَجَلَّ મુઝે બખ્શ દે ઓર મેં ગુમાન કરતા હૂં કે તૂ મુઝે નહીં બખ્શેગા.” મેં ઈસ કી ઈસ અજબ સી દુઆ પર બહોત મુતઅજિજબ હુવા કે سُبْحَانَ اللهِ الْعَظِيمِ આખિર ઈસ કા ઐસા કૌન સા ગુનાહ હૈ જિસ કી બખ્શિશ કી ઈસ કો ઉમ્મીદ નહીં, મગર મેં તવાફ મેં મસ્રૂફ રહા. દૂસરે ફેરે મેં ભી સુના તો વોહ યેહી કેહ રહા થા, મેરી હૈરાની મેં મઝીદ ઈઝાફા હુવા. મેં ને તવાફ સે ફારિગ હો કર ઉસ સે કહા, તૂ ઐસે અઝીમ મકામ પર હૈ જહાં બડે સે બડા ગુનાહ ભી બખ્શા જાતા હૈ તો અગર તૂ અલ્લાહ عَزَّوَجَلَّ સે મગ્ફિરત ઓર રહમત તલબ કરતા હૈ તો ઉસ સે ઉમ્મીદ ભી રખ કયૂંકે વોહ બડા રહીમો કરીમ હૈ. ઉસ શખ્સ ને કહા : ઐ અલ્લાહ કે બન્દે તૂ કૌન હૈ ? મેં ને કહા, મેં સુલૈમાન અલ અઅમશ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ હૂં ! ઈસ ને મેરા હાથ પકડા ઓર મુઝે એક તરફ લે ગયા ઓર કેહને લગા, મેરા ગુનાહ બહોત બડા હૈ. મેં ને કહા, કયા તેરા ગુનાહ પહાડોં, આસ્માનોં, ઝમીનોં ઓર અર્શ સે ભી બડા હૈ ? કેહને લગા, હાં મેરા ગુનાહ બહુત ઝિયાદા બડા હૈ ! અફસોસ ! ઐ સુલૈમાન ! મેં ઉન સત્તર બદ નસીબ આદમિય્યોં મેં સે હૂં જો હઝરતે સચ્ચિદુના ઈમામે આલી મકામ ઈમામે

ﷺ ﷺ کے سرے انور کو یحییٰ پلید کے پاس لائے تھے۔ یحییٰ پلید نے اس
 مبارک سر کو شہر کے باہر لٹکانے کا حکم دیا۔ ﷺ کے حکم سے اُتارا گیا
 اور سونے کے تخت میں رہ کر اس کے سونے کے کمرے (BEDROOM) میں رہا گیا۔ آधी
 رات کے وقت یحییٰ پلید کی زوجہ کی آنکھیں چلی تو اس نے دیکھا کہ ﷺ کے
 ﷺ کے سرے انور سے لے کر آسمان تک ایک نوری شمع جگمगा رہی ہے ! یہ
 دیکھ کر وہ سبھی ﷺ اور اس نے یحییٰ پلید کو جगाया और कहा, उठ कर
 दो, मैं एक अणुबो गरीब मन्तर देख रही हूँ, यही ने भी उस रोशनी को देखा और
 चामोश रहने के लिये कहा. जब सुबह हुई तो उस ने सरें अनुर निकलवा कर दीबाये
 सब (एक उम्दा किस्म के सब कपडे) के पैमे में रखवा दिया. और उस की निगरानी के
 लिये सत्तर⁷⁰ आदमी मुकर्रर कर दिये, मैं भी उन में शामिल था. ﷺ हमें हुकम हुवा जाओ
 जाना आओ. जब सूरज गुडग डो गया तो काही रात गुजर गई तो हम सो गये
 यकायक मेरी आंख खुल गई, क्या देखा हूँ के आस्मान पर एक बडा बादल छाया हुवा है
 और उस में से गडगडाहट और परों की डडडाहट की सी आवाज आ रही है ﷺ वो
 बादल करीब डोता गया यहां तक के जमीन से मिल गया और उस में से एक मर्द नुमूदार
 हुवा जिस पर जन्नत के डो हुल्ले थे और उस के हाथ में एक इर्श और कुर्सियां थीं, उस ने
 वो इर्श बिछाया और उस पर कुर्सियां रख दीं और पुकारने लगा : **ऐ अबुल बशर ! ऐ
 आदम** **ﷺ ! तशरीफ लाईये.** एक निहायत हसीनो जमील बुजुर्ग तशरीफ
 लाये सरें मुबारक के पास जा डो कर इरमाया: “सलामत डो तुज पर ऐ अब्बाह के वली !
 सलाम डो तुज पर ऐ बकिथतुस्सालिडीन ! जिन्दा रहे तुम सईद डो कर, कतल हुये तुम
 तरीद डो कर या’नी बड् डो कर, प्यासे रहे डता के अब्बाह **ﷺ** ने तुम्हें हम से मिला
 दिया. अब्बाह **ﷺ** तुम पर रहम इरमाये और तुम्हारे कातिल के लिये बप्शिश नहीं,
 तुम्हारी कातिल के लिये डोजभ बडोत बुरा ठिकाना है.”

ये इरमा कर वो वहां से डटे और उन कुर्सियों में से एक कुर्सी पर तशरीफ इरमा डो
 गये. ﷺ थोडी डेर के बाद एक और बादल आया और वो भी इसी तरड जमीन से
 मिल गया और मैं ने सुना के एक मुनादी ने निदा की : **ऐ नबिय्यव्बाह ! ऐ नूड
 तशरीफ लाईये.** नागाह एक सालिबे वजहत जर्दी माईल येडरे वाले
 बुजुर्ग डो² जन्नती हुल्ले पडने हुये तशरीफ लाये और उन्डों ने भी वो इरमा
 इरमाये और एक कुर्सी पर बैठ गये. ﷺ एक और बडा बादल आया और उस में से
 डजरते सय्यिदुना ईब्राहीम बलीलुव्बाह **ﷺ** नुमूदार हुये उन्डों ने भी वोडी
 कलिमात इरमाये और एक कुर्सी पर बैठ गये इसी तरड डजरते सय्यिदुना मूसा कलीमुव्बाह
ﷺ और डजरते सय्यिदुना ईसा इडुव्बाह **ﷺ** तशरीफ लाये
 और इसी तरड के कलिमात ईशाद इरमा कर कुर्सियों पर जव्वा अइरोज डो गये. ﷺ एक
 बडोत डी बडा बादल आया उस में से डजरते सय्यिदुना व मौलाना मुडम्मडे म-दनी

صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ और उजरते सय्यिदतुना बीबी फ़ातिमा और उजरते सय्यिदतुना उसन मुजतबा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا और मलाईका नुमूदार हुअे. पहले मदीने के सुल्तान, रहमते आलमियान, सरवरे जीशान صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ सरे अन्वर के पास तशरीफ ले गअे और सरे मुबारक को सीने से लगाया और बहोत रोअे. फिर उजरते सय्यिदतुना बीबी फ़ातिमा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا को दिया, उन्हों ने भी सीने से लगाया और बहोत रोई. फिर उजरते सय्यिदतुना आदम सफ़ियुल्लाह عَلِيٌّ نَبِيُّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام ने नबिय्ये रहमत, शहीअे उम्मत, शहन्शाहे नुबुव्वत, ताजदारे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के पास आ कर यूं ता'जिय्यत की :

**السَّلَامُ عَلَى الْوَلَدِ الطَّيِّبِ، السَّلَامُ عَلَى الْخَلْقِ الطَّيِّبِ، أَعْظَمَ
اللَّهُ أَجْرَكَ وَأَحْسَنَ عِزَاءَكَ فِي آيَاتِكَ الْحُسَيْنِ**

सलाम हो पाकीजा इतिरत व अस्लत वाले पाक इरजन्द पर, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को बहोत जियादा सवाब अता इरमाअे और आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के शहजादअे गिरामी हुसैन (के इस इम्तिहान) में बेहतरीन सअ्र दे.

इसी तरह उजरते सय्यिदतुना नूह عَلِيٌّ نَبِيُّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام, उजरते सय्यिदतुना इब्राहीम अलीलुल्लाह عَلِيٌّ نَبِيُّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام, उजरते सय्यिदतुना मूसा कलीमुल्लाह عَلِيٌّ نَبِيُّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام, उजरते सय्यिदतुना इसा इडुल्लाह عَلِيٌّ नَبِيُّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام ने भी ता'जिय्यत इरमाई. फिर सरकारे वाला तभार, बि इज्जिन परवर्द गार, दो² जहां के मालिको मुप्तार, शहन्शाहे अबरार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने यन्द कलिमात इशाई इरमाअे. फिर अेक इरिशते ने सरकारे मदीना, सुल्ताने आ करीना, करारे कलबो सीना, इेज गन्जना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآLِهِ وَسَلَّمَ के करीब आ कर अर्ज की, अै अबुल कासिम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآLِهِ وَسَلَّمَ (इस वाकियअे हाईला से) हमारे दिल पाश पाश हो गअे हैं. मैं आस्माने हुन्या पर मुवक्कल¹ हूं. अल्लाह तआला ने मुजे आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآLِهِ وَسَلَّمَ की इताअत का हुकम दिया है अगर आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآLِهِ وَسَلَّمَ मुजे हुकम इरमाअें तो मैं इन लोगों पर आस्मान ढा हूं और उन को तबाहो बरबाद कर हूं. फिर अेक और इरिशते ने आ कर अर्ज की, अै अबुल कासिम ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآLِهِ وَسَلَّمَ मैं दरयाओं पर मुवक्कल हूं, अल्लाह तआला ने मुजे आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآLِهِ وَسَلَّمَ की इताअत का हुकम दिया है अगर आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآLِهِ وَسَلَّمَ इरमाअें तो मैं इन पर तूफान बरपा कर के उन को तडेस नडेस कर हूं. सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآLِهِ وَسَلَّمَ ने इरमाया : अै इरिशतो ! अैसा करने से बाज रहो. उजरते सय्यिदतुना उसन मुजतबा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने (सोअे हुअे योकीदारों की तरफ इशारा करते हुअे बारगाडे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآLِهِ وَسَلَّمَ में) अर्ज की, नाना ज्ञान ! येह जो सोअे हुअे हैं येही वोह लोग हैं जो मेरे भाई (हुसैन رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ) के सरे अन्वर को लाअे हैं और येही निगरानी पर भी मुकर्रर हैं. तो नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآLِهِ وَسَلَّمَ ने इरमाया : “अै मेरे रब عَزَّوَجَلَّ के इरिशतो मेरे बेटे के कत्ल के बदले में इन को कत्ल कर दो.” तो पुढा की कसम ! मैं ने देभा के यन्द ही लम्हों में मेरे सब साथी जल्द कर दिये गअे. फिर अेक इरिशता मुजे जल्द करने के लिये बढा तो मैं ने पुकारा, अै अबुल कासिम ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآLِهِ وَسَلَّمَ मुजे अयाईये और मुज पर रहम इरमाईये अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप पर रहम इरमाअे. तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآLِهِ وَسَلَّمَ

ફિરિશ્તે સે ફરમાયા : “ઇસે રહને દો ફિર આપ ﷺ ને મેરે કરીબ આ કર ફરમાયા : તૂ ઈન સત્તર⁷⁰ આદમિયોં મેં સે હૈ જો સર લાએ થે ? મેં ને અર્ઝ કી જ હાં ! પસ આપ ﷺ ને અપના હાથ મુબારક મેરે કન્ધે પર ડાલ કર મુઝે મુંહ કે બલ ગિરા દિયા ઓર ફરમાયા : “અલ્લાહ ﷻ તુઝ પર રહ્મ ન કરે ઓર ન તુઝે બખ્શો, અલ્લાહ ﷻ તેરી હકિયોં કો નારે દોઝખ મેં જલાએ.” તો યેહ વજહ હૈ કે મેં અલ્લાહ ﷻ કી રહમત સે ના ઉમ્મીદ હૂં. હઝરતે સય્યિદુના આ’મશ ﷺ ને યેહ સુન કર ફરમાયા : ઓ બદ બખ્ત ! મુઝ સે દૂર હો કહીં તેરી વજહ સે મુઝ પર ભી અઝાબ નાઝિલ ન હો જાએ.

(શામે કરબલા, સ.267 તા 270)

બાગે જન્નત છોડ કર આએ હેં મહબૂબે ખુદા એ ઝહે કિસ્મત તુમહારી કુશ્તગાને¹ અહલે બૈત હુબ્બે જહો માલ

મીઠે મીઠે ઇસ્લામી ભાઈયો ! હુબ્બે જાહો માલ બહોત હી બુરા વબાલ હૈ. મેરે પ્યારે પ્યારે આકા, મદીને વાલે મુસ્તફા ﷺ કા ફરમાને મુઅઝ્ઝમ હૈ : દો² ભૂકે ભેડિયે બકરિયોં મેં છોડ દિયે જાએ વોહ ઇતના નુક્સાન નહીં પહોંચાતે જિતના કે માલો મરતબા કા લાલાય ઇન્સાન કે દીન કો નુક્સાન પહોંચાતા હૈ.

(સુ-નને તિરમિઝી, જિ.4, સ.166, હદીસ:2383)

યઝીદે પલીદ માલો જાહ કી મહબ્બત હી કી વજહ સે સાનિહએ હાઈલા કર્બો બલા કે વુકૂઅ કા બાઈસ બના. ઇસ ઝાલિમે બદ અન્જામ કો ઇમામે આલી મકામ સય્યિદુના ઇમામે હુસૈન ﷺ કી ઝાતે ગિરામી સે અપને ઇક્તિદાર કો ખતરા મહસૂસ હોતા થા. હાલાંકે સય્યિદુના ઇમામે આલી મકામ ﷺ કો દુન્યાએ ના પાએદાર કે ઇક્તિદાર સે ક્યા સરોકાર ! આપ ﷺ કલ ભી ઉમ્મતે મુસ્લિમા કે દિલોં કે તાજદાર થે, આજ ભી હેં ઓર રહતી દુન્યા તક રહેંગે,

ન હી શિખ કા વોહ સિતમ રહા, ન યઝીદ કી વોહ જફા રહી
જો રહા તો નામ હુસૈન કા, જિસે ઝિન્દા રખતી હૈ કરબલા

યઝીદ કી ઇબ્તનાક મોત

હઝરતે સય્યિદુના હસને બસરી ﷺ સે મુર્સલન મરવી હૈ કે : હુબ્બુદ્દુન્યા રઅસુ કુલિલ ખતીઅતિન યા’ની દુન્યા કી મહબ્બત હર બુરાઈ કી જડ હૈ.

(અલ જામેઉસ્સગીર લિસ્સુયૂતી, સ.223, હદીસ:3662, દારુલ કુતુબિલ ઇલ્મિયા બૈરૂત)

યઝીદે પલીદ કા દિલ ચૂંકે દુન્યાએ ના પાએદાર કી મહબ્બત સે સરશાર થા ઇસ લિયે વોહ શોહરત વ ઇક્તિદાર કી હવસ મેં ગરિફતાર હો ગયા. અપને અન્જામ સે ગાફિલ હો કર ઉસ ને ઇમામે આલી મકામ ઓર આપ કે રુફકા ﷺ કે ખૂને ના હક સે અપને હાથોં કો રંગ લિયા. જિસ ઇક્તિદાર કી ખાતિર ઉસ ને કરબલા મેં ઝુલ્મો સિતમ કી આંધિયાં ચલાઈ વોહ ઇક્તિદાર ઉસ કે લિયે કુછ ઝિયાદા હી ના પાએદાર સાબિત હુવા. બદ નસીબ યઝીદ સિફ ત્રીન

બરસ છે માહ તપ્તે હુકૂમત પર શૈતનત (યા'ની શરાત વ ખબાસત) કર કે રબીઉન્નૂર શરીફ સિને 64 હિજરી કો મુલ્કે શામ કે શહર “હમ્સ” કે અલાકે હુવ્વારૈન મેં 39 સાલ કી ઉમ્ર મેં મર ગયા.

(અલ કામિલ ફિતારીખ, જિલ્દ:3, સ.464, દારુલ કુતુબિલ ઈલ્મિયા, બૈરૂત)

યઝીદે પલીદ કી મૌત કા એક સબબ યેહ ભી બતાયા જાતા હૈ કે વોહ એક રૂમિયુન્નસ્લ લડકી કે ઈશક મેં ગરિફતાર હો ગયા થા મગર વોહ લડકી અન્દરૂની તૌર પર ઉસ સે નફરત કરતી થી. એક દિન રંગ રલિયા મનાને કે બહાને ઉસ ને યઝીદ કો દૂર વીરાને મેં તન્હા બુલાયા વહાં કી ઠન્ડી હવાઓં ને યઝીદ કો બદ મસ્ત કર દિયા. ઉસ દોશીઝા ને યેહ કેહતે હુએ કે જો બે ગૈરત વ ના બકાર અપને નબી કે નવાસે કા ગદાર હો વોહ મેરા કબ વફાદાર હો સકતા હૈ, ખન્જરે આબદાર કે પૈ દર પૈ વાર કર કે ચીર ફાડ કર ઉસ કો વહીં ફેંક દિયા. ચન્દ રોઝ તક ઉસ કી લાશ ચીલ કવ્વોં કી દા'વત મેં રહી. બિલ આખિર ઢૂંડતે હુએ ઉસ કે અહાલી મવાલી વહાં પહોંચે ઓર ગઢા ખોદ કર ઉસ કી સડી હુઈ લાશ કો વહીં દાબ આએ.

(અવરાકે ગમ, સ. 550)

**વોહ તપ્ત હૈ કિસ કબ્ર મેં વોહ તાજ કહાં હૈ
એ ખાક બતા ઝોરે યઝીદ આજ કહાં હૈ ?**

ઇબ્ને ઝિયાદ કા દર્દનાક અન્જામ

યઝીદે પલીદ કી વોહ ચન્ડાલ ચૌકડી જિસ ને મૈદાને કરબલા મેં ગુલશને રિસાલત કે મ-દની ફૂલોં કો ખાકો ખૂન મેં તડપાયા થા. ઉન કા ભી ઈબ્રતનાક અન્જામ હુવા. યઝીદે પલીદ કે બા'દ સબ સે બડા મુજરિમ કૂફા કા ગવર્નર ઉબૈદુલ્લાહ ઈબ્ને ઝિયાદ થા. ઈસી બદ નિહાદ કે હુકમ પર ઈમામે આલી મકામ عليه السلام ઓર આપ કે અહલે બૈતે કિરામ عليهم السلام કો ઝુલ્મો સિતમ કા નિશાના બનાયા ગયા થા. નૈરંગિયે દુન્યા કા તમાશા દેખિયે કે મુખ્તાર સકફી કી તરકીબ સે ઈબ્રાહીમ બિન માલિક અશ્તર કી ફૌજ કે હાથોં દરિયાએ ફુરાત કે કનારે સિર્ફ 6 બરસ કે બા'દ યા'ની 10 મુહર્રમુલ હરામ સિને 67 હિજરી કો ઈબ્ને ઝિયાદે બદ નિહાદ ઈન્તિહાઈ ઝિલ્લત કે સાથ મારા ગયા ! લશ્કરિયોં ને ઉસ કા સર કાટ કર ઈબ્રાહીમ કો પેશ કર દિયા ઓર ઈબ્રાહીમ ને મુખ્તાર કે પાસ કૂફા ભિજવા દિયા.

(સવાનેહે કરબલા, સ.123, મુલખ્ખસન)

**જબ સરે મહશર વોહ પૂછેંગે બુલા કે સામનો
ક્યા જવાબો જુર્મ દોગે તુમ ખુદા ﷻ કે સામનો**

ઇબ્ને ઝિયાદ કી નાક મેં સાંપ

દારુલ અમારાત કૂફા કો આરાસ્તા કિયા ગયા ઓર ઉસી જગહ ઈબ્ને ઝિયાદે બદ નિહાદ કા સરે નાપાક રખા ગયા જહાં 6 બરસ કબ્લ ઈમામે આલી મકામ عليه السلام કા

सरे पाक रखा गया था. इस बढ नसीब पर रोने वाला कोई नहीं था बल्के उस की मौत पर जश्न मनाया जा रहा था. (सवानेहे करबला, स.123) सहीह उदीस में इमारह बिन उमैर से मरवी है के जब अबैदुल्लाह इब्ने जियाद का सर मअ उस के साथियों के सरो के ला कर रखा गया तो मैं उन के पास गया. अयानक गुल पड गया “आया आया”. मैं ने देखा के अेक सांप आ रहा है, सब सरो के बीच में डोता हुवा इब्ने जियाद के (नापाक) नथनों में दाखिल हो गया और थोडी देर ठहर कर चला गया. उता के गाँव हो गया. फिर गुल पडा, “आया आया” दो या तीन बार ऐसा ही हुवा.

(सु-नने तिरमिजी, जि.5, स.431. उदीस:3805, दारुल इंक बैरत)

इब्ने जियाद, इब्ने सअ्द, शिभ्र, कैस इब्ने अशअस कुन्दी, मौली इब्ने यजीद, सिनान इब्ने अनस नफ्थ, अब्दुल्लाह इब्ने कैस, यजीद बिन मालिक और बाकी तमाम अशिक्या' जो उजरते सय्यिदुना इमामे आली मकाम عليه السلام के क्तल में शरीक थे और साई (या'नी कोशिश करने वाले) थे तरह तरह की उकूबतों (या'नी अजिय्यतों) से क्तल किये गअे और उन की लार्शें घोडों की टापों से पामाल कराई गई.

(सवानेहे करबला, स.158)

कब तक तुम हुकूमत पे इतराओगे
 कब तक आबिर गरीबों को तडपाओगे
 जालिमो ! बा'द मरने के पछताओगे
 तुम जहन्नम के उकदार हो जाओगे

सच है के बुरे का अन्जाम बुरा है

मुप्तार सकई ने युन युन कर यजीदियों का सझाया किया. जालिमों को क्या मा'लूम था के भूने शुडदा रंग लाअेगा और सदतनत के पुर्जे उड जाअेंगे. हर अेक शप्स जो क्तले इमाम में शरीक हुवा है तरह तरह के अजाबों से उलाक होगी. वोडी कुरात का कनारा होगी, वोडी आशूरा का दिन, वोडी जालिमों की कौम होगी और मुप्तार के घोडे उन्हें रौंदते होंगे. उन की जमाअतों की कसरत उन के काम न आअेगी. उन के हाथ पाँउं काटे जाअेंगे घर लूटे जाअेंगे, सूदियां दी जाअेंगी, लार्शें सडेंगी और दुन्या में हर शप्स तुङ तुङ करेगा. उन की उलाकत पर जुशी मनाई जाअेगी. मा'रिकअे जंग में अगर्चे उन की ता'दाद उजारों की होगी मगर वोड दल छोड कर हीजडों की तरह भागेंगे और यूहों और कुतों की तरह उन्हें जान बयानी मुशिकल होगी, जहां पाअे जाअेंगे मार दिये जाअेंगे. दुन्या में क्रियामत में उन पर नईरत व मलामत की जाअेगी.

(सवानेहे करबला, स.125)

देषें हें येह दिन अपनो डी हाथों की ब दौलत
 सच है के बुरे काम का अन्जाम बुरा है

मुफ्तार ने नुबुव्वत का दा'वा कर दिया

भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! अपने बारे में अल्लाह ﷻ की पुङ्ग्या तदबीर को कोई नहीं जानता के क्या है. मुफ्तार स-कई जिस ने कातिलीने हुसैन को युन युन कर मारा और मुहिब्बीने हुसैन के दिल जते मगर उस पर शकावते अजली' गालिब हुई और उस ने नुबुव्वत का दा'वा कर दिया और केहने लगा, मेरे पास वहुय आती है.

(अस्सवाईकुल मुहर्रिकह, स.198)

वस्वसा: ईतना जबरदस्त मुहिब्बे अहले बैत किस तरह गुमराह हो कर मुरतद हो सकता है. क्या किसी ठूटे नबी को भी जैसे शानदार कारनामे की तौफीक हासिल हो सकती है ?

वस्वसे का धलाज: अल्लाह ﷻ ने नियाज है. उस की पुङ्ग्या तदबीर से हम सभी को उरना याहिये के न जाने हमारा अपना क्या बनेगा ! देजिये ! शैतान भी बहोत जबरदस्त आलिमो इज्जिल और आबिदो ज़ाहिद था. उस ने हज़ारों बरस ईबादत की थी मगर शकावते अ-जली गालिब आई और वोह काफ़िर व मलूिन हो गया. बल्अम बिन बाउिरा भी बहोत बडा आलिम, आबिदो ज़ाहिद और मुस्तज़बुद्दा'वात था. उस को ईस्मे आ'ज़म का ईल्म था. अपनी जगह बैठ कर इडानिय्यत के सबब अर्शे आ'ज़म को देज लिया करता था मगर शकावते अजली जब गालिब आ गई तो बे ईमान हो कर मर गया और कुत्ते की शकल में दाबिले जहन्नम होगा. ईब्ने सका जो के जहीन तरीन आलिम व मुनाज़िर था मगर वक्त के गौस की बे अ-दबी का मुर्तकिब हो गया बिल आबिर नस्रानी शहजादी के ईशक में मुब्तला हो कर नस्रानी मज़हब कबूल करने के बा'द जिल्लत की मौत मर गया.

अल्लाह तआला ने अपने हबीब हज़रते मुहम्मदे मुस्तफ़ा ﷺ की वहुय इरमाई के मैं ने यहुया बिन जकरिया عَلَيْهِمَا السَّلَام के कत्ल के ईवज सत्तर हज़ार⁷⁰⁰⁰⁰ अइराद मारे थे और तुम्हारे नवासे के ईवज उन से दुगने (या'नी उबल) माउंगा.

(अल मुस्तदरक बिल हाकिम, जि.3, स.485, हदीस:4208)

तो तारीख़ शाहिद है के हज़रते यहुया बिन जकरिया عَلَيْهِمَا السَّلَام के पूने ना हक का बदला लेने के लिये अल्लाह तआला ने आप्ते नस्र जैसे ज़ालिम को मुतअय्यन किया जो पुदाई का दा'वा करता था ईसी तरह हज़रते ईमामे आली मकाम के पूने ना हक का बदला लेने के लिये मुफ्तार सकई जैसे कज़ाब को मुकरर इरमाया.

(शामे करबला, स.285)

अल्लाह तआला की मस्लिहतें पुद वोही जानता है. वोही अपनी मशियत से ज़ालिमों के जरीअे भी ज़ालिमों को हलाक करता है. युनान्चे सूरतुल अन्आम आयत नम्बर 129 में ईशाद होता है :

وَكَذَلِكَ نُوَلِّي بَعْضَ الظَّالِمِينَ تَرْجَمُوهُ إِيمَانًا : और यूं ही हम ज़ालिमों में अक को दूसरे पर
بَعْضًا بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ मुसल्लत करते हैं. बदला उन के किये का.

(पारह:8, अल अन्आम: 129)

હુઝૂરે પુર નૂર, શાફેએ યૌમુન્નુશૂર صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ફરમાતે હૈં : બેશક અલ્લાહ عَزَّوَجَلَّ ઇસ દીને ઇસ્લામ કી મદદ ફાજિર યા'ની બદકાર આદમી કે ઝરીએ સે ભી કરા લેતા હૈ.

(સહીહ બુખારી, જિ.2, સ.328, હદીસ:3062, દારુલ ફુતુબિલ ઇલ્મિયા બૈરૂત)

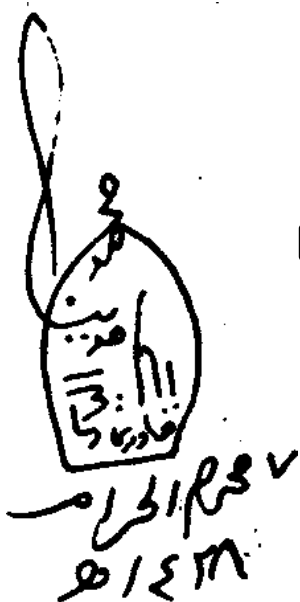
અલ્લાહ કી ખુફ્યા તદબીર સે ડરના ચાહિયે

હમૈં હર વક્ત અલ્લાહ عَزَّوَجَلَّ કી ખુફ્યા તદબીર સે ડરતે રહના ચાહિયે અપની ઇલ્મિયત, શાનો શૌકત, ઓર જિસ્માની તાકત પર ઘમન્ડ સે બચના ઓર ચર્બ ઝબાની ઓર ફૂંફાં સે પરહેઝ કરના ઝરૂરી હૈ કે ન મા'લૂમ ઇલ્મે ઇલાહી عَزَّوَجَلَّ મૈં હમારા ક્યા મકામ હો. કહીં ઐસા ન હો કે ઇમાન બરબાદ હો જાએ. ઇમાન કી હિફાઝત કે લિયે કુઢને કા ઝેહન બનાને, ઇશકે મુસ્તફા વ સહાબા વ અહલે બૈત صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ પાને દીની મા'લૂમાત બઢાને, અપને આપ કો બુરાઈયોં સે બચાને, નેકિયાં અપનાને ઓર ખૂબ ખૂબ સવાબ કમાને કી ખાતિર તમામ ઇસ્લામી ભાઈયોં કો ચાહિયે કે હર માહ કમ અઝ કમ તીન³ દિન કે લિયે દા'વતે ઇસ્લામી કે સુન્નતોં કી તરબિયત કે મ-દની કાફિલોં મૈં આશિકાને રસૂલ કે સાથ સુન્નતોં ભરા સફર ફરમાએ. ઇસ્લામી ભાઈ રોઝાના ફિકે મદીના કે ઝરીએ 72 મ-દની ઇન્આમાત ઓર ઇસ્લામી બહન 63 મ-દની ઇન્આમાત કા કાર્ડ પુર કર કે અપને તન્ઝીમી ઝિમ્માદાર કો જમ્મ કરવાએ.

યા અલ્લાહ عَزَّوَجَلَّ ! શાહે ખૈરુલ અનામ, સહાબએ કિરામ, શહીદે મઝ્લૂમ ઇમામે આલી મકામ ઓર જુમ્લા શહીદાન વ અસીરાને કરબલા صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ કા વાસિતા હમારા ઇમાન સલામત રખ, હમૈં કબ્રો હશર મૈં અમાન બખ્શ ઓર હમારી બે હિસાબ મગ્ફિરત ફરમા. યા અલ્લાહ عَزَّوَجَلَّ ! હમૈં ઝેરે ગુમ્બદે ખઝરા જલ્વએ મહબૂબ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ મૈં ઇમાન વ આફિયત કે સાથ શહાદત, જન્નતુલ બકીઅ મૈં મદફન ઓર જન્નતુલ ફિરદૌસ મૈં અપને પ્યારે હબીબ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآLِهِ وَسَلَّمَ કા પડૌસ નસીબ ફરમા.

امين بجاء النبي الامين صلى الله تعالى عليه وآله وسلم

મુશ્કિલોં હલ કર શહે મુશ્કિલ કુશા કે વાસિતે
કર બલાએં રદ શહીદે કરબલા કે વાસિતે



ગમે મદીના વ
બકીઅ વ બિલા
હિસાબ મગ્ફિરત વ
જન્નતુલ ફિરદૌસ
મૈં સરકાર કે પડૌસ
કા તલબગાર
અત્તારે ગુ નહગાર

મદ કે લિયે સબ સે બડા
વઝીફા : તકબીરે ઉલા
કે સાથ પાંચ વક્ત
મસ્જિદ કી પહલી સફ મૈં
બા જમાઅત નમાઝ
પઢના

આશૂરા કે ફઝાઇલ

“યા શહીદે કરબલા હો દૂર હર રન્જો બલા” કે પરચીસ હુરફ કી

નિસ્બત આશૂરા કી 25 ખુસૂસિયાત

- (1) 10 મુહર્રમુલ હરામ આશૂરા કે રોઝા હઝરતે સચ્ચિદુના આદમ સફિયુલ્લાહ عَلَى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ કી તૌબા કબૂલ કી ગઈ
- (2) ઈસી દિન ઉન્હેં પૈદા ક્રિયા ગયા
- (3) ઈસી દિન ઉન્હેં જન્નત મેં દાખિલ ક્રિયા ગયા
- (4) ઈસી દિન અર્શ
- (5) કુર્સી
- (6) આસ્માન
- (7) ઝમીન
- (8) સૂરજ
- (9) ચાંદ
- (10) સિતારે ઔર
- (11) જન્નત પૈદા ક્રિયે ગએ
- (12) ઈસી દિન હઝરતે સચ્ચિદુના ઈબ્રાહીમ ખલીલુલ્લાહ عَلَى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ પૈદા હુએ.
- (13) ઈસી દિન ઉન્હેં આગ સે નજાત મિલી.
- (14) ઈસી દિન હઝરતે સચ્ચિદુના મૂસા કલીમુલ્લાહ عَلَى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ ઔર આપ કી ઉમ્મત કો નજાત મિલી ઔર ફિરઔન અપની કૌમ સમેત ગરક હુવા
- (15) હઝરતે સચ્ચિદુના ઈસા રુહુલ્લાહ عَلَى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ પૈદા ક્રિયે ગએ
- (16) ઈસી દિન ઉન્હેં આસ્માનોં કી તરફ ઉઠાયા ગયા
- (17) ઈસી દિન હઝરતે સચ્ચિદુના નૂહ عَلَى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ કી કિશ્તી કોહે જૂદી પર ઠહરી
- (18) ઈસી દિન હઝરતે સચ્ચિદુના સુલૈમાન عَلَى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ કો મુલ્કે અઝીમ અતા ક્રિયા ગયા
- (19) ઈસી દિન હઝરતે સચ્ચિદુના યૂનુસ عَلَى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ મછલી કે પેટ સે નિકાલે ગએ
- (20) ઈસી દિન હઝરતે સચ્ચિદુના યા'કૂબ عَلَى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ કી બીનાઈ કા ઝો'ફ દૂર હુવા
- (21) ઈસી દિન હઝરતે સચ્ચિદુના યૂનુસ عَلَى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ ગહરે કુંવેં સે નિકાલે ગએ
- (22) ઈસી દિન હઝરતે સચ્ચિદુના ઐયૂબ કી તકલીફ રફઅ કી ગઈ
- (23) આસ્માન સે ઝમીન પર સબ સે પહલી બારિશ નાઝિલ હુઈ
- (24) ઈસી દિન કા રોઝા ઉમ્મતોં મેં મશહૂર થા યહાં તક કે યેહ ભી કહા ગયા કે ઈસ દિન કા રોઝા માહે ર-મઝાનુલ મુબારક સે પહલે ફર્ઝ થા ફિર મન્સૂખ કર દિયા ગયા

(મુકાશફતુલ કુલૂબ, સ.211)

(25) ઈમામુલ હુમામ, ઈમામે આલી મકામ, ઈમામે અર્શ મકામ, ઈમામે તિશનાકામ સચ્ચિદુના ઈમામે હુસૈન رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ કો બમઅ શહઝાદગાન વ રુ-ફકા તીન દિન ભૂકા

रखने के बाद इसी आशूरा के रोज दशते करबला में छन्तिछाई सङ्काकी के साथ शहीद किया गया.

करबला के पांच छुड़के की निश्चत से मुहर्रमुल उराम और आशूरा के रोजों से 5 इजाईल

मदीना 1 उजरते सय्यिदुना अबू छुरैरा رضي الله تعالى عنه से रिवायत है छुजुरे अकरम, नूरे मुजस्सम, शाडे बनी आदम, रसूले मोह्तशम, शाङ्गे उमम صلى الله تعالى عليه وآله وسلم इरमाते हैं : “र-मजान के बाद मुहर्रम का रोजा अङ्गल है और इर्र के बाद अङ्गल नमाज सलातुल्लैल (या’नी रात के नवीङ्गल) है.”

(सहीड मुस्विम, स.891, उदीस:1163)

मदीना 2 तबीबों के तबीब, अल्लाह के उबीब, उबीबे लबीब عز وجل وصلى الله تعالى عليه وآله وسلم का इरमाने रडमत निशान है : मुहर्रम के उर दिन का रोजा अक मडीने के रोजों के बराबर है.

(त-बरानी इस्सगीर, जि.र, स.87, उदीस:1580)

आशूरा का रोजा

मदीना 3 उजरते सय्यिदुना अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास رضي الله تعالى عنهما इरमाते हैं : “में ने सुलताने दो² जडान, शडन्शाडे कौनो मकान, रडमते आलमियान صلى الله تعالى عليه وآله وسلم को किसी दिन के रोजे को और दिन पर इजीलत दे कर जुस्तुजु इरमाते न देया मगर येड के आशूरा का दिन और येड के र-मजान का मडीना.”

(सहीड बुजारी, जि.1, स.657, उदीस:2006)

यहूदियों की मुजालङ्गत करो

मदीना 4 नबिय्ये रडमत शङ्गे उम्मत, शडन्शाडे नुबुव्वत, ताजदारे रिसालत صلى الله تعالى عليه وآله وسلم ने इशरिद इरमाया: यौमे आशूरा का रोजा रभो और इस में यहूदियों की मुजालङ्गत करो, इस से पहले या बाद भी अक दिन का रोजा रभो.

(मुस्नदे इमाम अडमद, जि.1518, उदीस:2154)

आशूरा का रोजा जब भी रभे तो साथ ही नवीं या ग्यारहवीं मुहर्रमुल उराम का रोजा भी रभ लेना बेडतर है.

मदीना 5 उजरते सय्यिदुना अबू कतादा رضي الله تعالى عنه से रिवायत है, रसूलुल्लाह عز وجل وصلى الله تعالى عليه وآله وسلم इरमाते हैं : मुजे अल्लाह पर गुमान है के आशूरा का रोजा अक साल कडल के गुनाड मिटा देता है.

(सहीड मुस्विम, स.590, उदीस:1162)

सारा साल आंभें दुभें न बीमार हो

मुइस्सिरे शहीर उकीमुल उम्मत उजरते मुइती अडमद यार भान عليه رخصة الملائك इरमाते हैं मुहर्रम की नवीं और दस्वीं को रोजा रभे तो बडोत सवाब पाअेगा, बाल बच्चों के दिये दस्वीं

મુહર્રમ કો ખૂબ અચ્છે અચ્છે ખાને પકાએ તો إِنَّ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ સાલ ભર તક ઘર મેં બ-ર-કત રહેગી. બેહતર યેહ હૈ કે ખિચડા પકા કર હઝરતે સચ્ચિદુના ઈમામે હુસૈન رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ કી ફાતેહા કરે બહોત મુજર્રબ (યા'ની મુઅસ્સિર વ આઝમૂદા) હૈ. ઈસી તારીખ યા'ની **10 મુહર્રમુલ હરામ** કો ગુસ્લ કરે તો તમામ સાલ إِنَّ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ બીમારિયોં સે અમ્ન મેં રહેગા ક્યૂંકે ઉસ દિન આબે ઝમ ઝમ તમામ પાનિયોં મેં પહોંચતા હૈ. (તફ્સીરે રૂહુલ બયાન, જિ.4, સ. 142, કોઈટા, ઈસ્લામી ઝિન્દગી, સ.93) સરવરે કાઈનાત, શાહે મૌજૂદાત صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ને ઈશાદિ ફરમાયા : જો શખ્સ યોમે આશૂરા ઈસ્મદ સૂરમા આંખોં મેં લગાએ તો ઉસ કી આંખેં કભી ભી ન દુખેંગી.

(શુઅબુલ ઈમાન, જિ.3, સ.367, હદીસ:3797)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ